International Journal of Home Science 2024; 10(2): 150-154

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2024; 10(2): 150-154
© 2024 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 06-05-2024
Accepted: 08-06-2024

श्वेता कुमारी
शोध छात्रा, मगध विश्वविद्यालय, बोध-गया, बिहार, भारत।

स्मिता कुमारी
सहायक प्राध्यापक, स्नात्कोतर गृह विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोध-गया, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
स्मिता कुमारी
सहायक प्राध्यापक, स्नात्कोतर गृह विज्ञान विभाग, मगध विश्वविद्यालय बोध-गया, बिहार, भारत।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन

श्वेता कुमारी एवं स्मिता कुमारी

DOI: https://doi.org/10.22271/23957476.2024.v10.i2c.1613

सारांश
इस शोधपत्र का उद्देश्य कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना और विश्लेषण करना है। इसके लिए विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से जानकारी संकलित कर उनका विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि स्वतंत्रता के बाद से किए गए सरकारी प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। परिवार की सामाजिक और आर्थिक सशक्तता का माध्यम बनकर महिलाएं व्यक्तिगत रूप से भी सशक्त हुई हैं। परंपरा से आधुनिकता की ओर इस परिवर्तन के दौरान पुरुष और महिला को मिलकर कुछ मानक स्थापित करने होंगे ताकि महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक सशक्तता सार्थक हो सके। स्रोतों के अनुसार, 2022-23 में महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) 37% तक बढ़ गई है, जो 2017-18 में 23.3% थी। उच्च शिक्षा में महिलाओं का नामांकन भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। एक ओर, वे अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो रही हैं, वहीं दूसरी ओर, कार्यस्थल पर भी अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर रही हैं। हालांकि, यौन उत्पीड़न और घरेलू हिंसा जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि सरकारी प्रयासों और योजनाओं ने महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है, लेकिन समग्र सशक्तता के लिए पुरुष और महिलाओं के बीच सहयोग और समन्वय की आवश्यकता है।

कूटशब्द: कामकाजी महिला, आर्थिक सशक्तता, सामाजिक सशक्तता, लैंगिक समानता, सरकारी योजना।

प्रस्तावना
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन और सुधार देखने को मिल रहे हैं। कई क्षेत्रों में महिलाएं अपनी प्रतिभा और क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति मजबूत हो रही है। किसी भी समाज की तस्वीर बदलने में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि "मुझे योग्य माताएँ दो, मैं तुम्हें योग्य राष्ट्र दूंगा।" आज, महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। महिला सशक्तिकरण के इस युग में, महिलाएं घर की देहरी से बाहर कदम बढ़ाकर कामकाजी महिला होने का गौरव प्राप्त कर रही हैं और समाज में अपनी स्थिति को बदलने का जिम्मा उठा रही हैं। पारंपरिक समाज में, महिलाओं को केवल माँ, बहू या पत्नी के रूप में पहचाना जाता था।

आज, उन्होंने अपनी परंपरागत छवि को तोड़ते हुए स्वयं की पहचान बनाई है। महिलाएं पुरुषों के समान स्तर, अवसर और सामाजिक, आर्थिक, तथा कानूनी अधिकार प्राप्त कर रही हैं।

कामकाजी महिलाओं की स्थिति का पता लगाना एक बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य है। सभी महिलाएं किसी न किसी रूप में काम करती हैं, लेकिन घर में काम करने वाली महिलाओं के काम का कोई आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता हैं जिसके कारण उन्हें कामकाजी महिलाओं की श्रेणी में नहीं रखा जाता। जबकि महिलाएं किसी भी घर परिवार की धुरी होती हैं और कामकाज के बोझ तले दबी रहती हैं, लेकिन उनके कार्य का कोई आर्थिक मूल्यांकन नहीं होता, और ही कोई महत्त्व महत्व दिया जाता हैं। हालांकि सामान्य रूप से एक महिला का पूरा जीवन हमेशा अपने परिवार को समर्पित रहता है, आज की महिलाएं परिवार से इतर स्वयं के बारे में भी सोचने लगी हैं। लेकिन क्या समाज ने उनकी इस नई सोच को स्वीकृत किया है? मैंने अपने शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है।

स्रोत:

Drishti IAS: [Status of Women in India] (https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/status-of-women-in-india). Hindustan Times: [10% of working women face sexual harassment at workplace] (https://www.hindustantimes.com/india-news/status-of-women-in-india-report-10-of-working-women-face-sexual-harassment-at-workplace-101621582927442.html).

शोध का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये है-

1) कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2) कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि-

प्रस्तुत शोध की प्रकृति विश्लेषणात्मक है, जिसके लिए विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्राप्त आकड़ों तथा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त लिखित सामग्री के अध्ययन के आधार पर महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषणत्मक अधययनकिया गया है। इस शोध कार्य में कामकाजी महिला का तात्पर्य ऐसी महिला से है जिसे किसी भी प्रकार के शारीरिक अथवा मानसिक कार्य के बदले आर्थिक रूप में धन की प्राप्ति करती है। सामाजिक स्थिति का तात्पर्य महिला को उसके कार्यों के आधार पर समाज में प्राप्त प्रतिष्ठा से है। इसी प्रकार एक आर्थिक ईकाई के रूप में महिला के कार्यों का ऑकलन तथा स्वयं व परिवार के विकास में उसकी भूमिका को आर्थिक स्थिति के रूप में लिया गया है। भादुडी (2015) ने भी अपने शोध कार्यों में लिखा है कि वर्तमान समय में कामकाजी महिलाएँ दोहरी चुनौतियों का सामना कर रही है। जबकि महिला और पुरुष दोनों ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों के लिए समान रूप से जिम्मेदार होने चाहिए।

कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति-

सामाजिक स्थिति

1. **शिक्षा का विस्तार:** वर्तमान समय में महिलाओं की शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई है और महिलाएं आज उच्च शिक्षा प्राप्त कर महिलाएं विभिन्न सरकारी और गैरसरकारी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर रही हैं।
2. **स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता:** आज की महिलाएं आत्मनिर्भरता हो रही हैं। वे स्वयं के निर्णय लेने और अपने जीवनयापन करने में सक्षम हो रही हैं। खासकर जब हम बिहार की बात करते हैं तो देखते हैं कि पहले की अपेक्षा वर्तमान समय में महिलाओं की आत्मनिर्भरता काफी बढी है।
3. **सामाजिक मान्यता:** समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आया है। उनके कार्यों और उपलब्धियों को सराहा जा रहा है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हो रहा है।
4. **कानूनी अधिकार:** महिलाओं के लिए कई कानूनी सुधार किए गए हैं, जो उनके अधिकारों की रक्षा करते हैं और उन्हें समाज में समानता दिलाने में सहायक सिद्ध हो रहा है।

आज महिलाएं हरेक क्षेत्रों में प्रगति कर रही है, इन सभी के बावजूद भी महिलाओं के लिए कुछ जगहों पर सामाजिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं जैसे यौन उत्पीड़न और घरेलू हिंसा जैसी समस्याएँ कामकाजी महिलाओं के लिए प्रमुख चिंता का विषय हैं। सरकारी आकड़ों के अनुसार, आज भी लगभग 10% कामकाजी महिलाएं कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न का सामना करती हैं। पितृसत्तात्मक मानदंड अब भी महिलाओं की शिक्षा और रोजगार विकल्पों को सीमित करते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी उच्च शिक्षा के लिए लडकियों को

लंबी दूरी तय कर स्कूल जाना पड़ता हैं। हालांकि बिहार सरकार ने लड़कियों को उच्च शिक्षा देने के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं की शुरुआत की है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि किसी राष्ट्र की उन्नति का अनुमान वहाँ की महिलाओं की स्थिति को देखकर लगाया जा सकता है। आज महिलाएँ एक

परिवर्तन के दौर से गुजर रही हैं। वे घरेलू जीवन से कामकाजी जीवन की ओर अपनी कदम बढ़ा रही हैं। एक ओर जहाँ वो अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर, अपने कार्यो द्वारा अपनी एक अलग पहचान बना रही रही हैं। कामकाजी महिलाओं का शिक्षा का स्तर उच्च होने के कारण, उनके पास अधिक जानकारी और सशक्त मानसिकता होती है। कार्यक्षेत्र में रोज़ नए अनुभव और समस्याएँ उनकी मानसिक स्तर को और विकसित करती हैं, जिससे उनके आत्मविश्वास में अत्यधिक वृद्धि हो रही है। अपने कार्यक्षेत्र से प्राप्त अनुभव के आधार पर वे अन्य क्षेत्रों में भी अपने ज्ञान और अनुभवों का उपयोग कर रही हैं। गोला (2016) के अनुसार, "पिछले पाँच दशकों में महानगरीय क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की जिम्मेदारियों में 35 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है।" महिला सशक्तिकरण के इस युग में कामकाजी महिलाओं को सामाजिक रूप से अधिक सम्मान प्राप्त होता है और उन्हें सामाज में अन्य महिलाओं के अपेक्षा अधिक सम्मान दिया जाता है। यह उन्हें अपने समाज के लिए कुछ करने और अपनी समाजिक पहचान बनाने का अवसर प्रदान करता है।जैसा कि हम सभी जानते हैं, आत्मविश्वास और आत्मसम्मान सिखाए नहीं जा सकते; ये प्रवृत्तियाँ परिस्थितियों के अनुसार स्वयं विकसित होती हैं (स्ट्रोमक्विस्ट, 2005)। सशक्तिकरण का मतलब है कि महिला को इतना कुशल बनाना कि वह अपने आसपास के सामाजिक और आर्थिक वातावरण का लाभ उठा सके और अपनी भावनाओं और इच्छाओं को दृढ़ता से व्यक्त कर सके। इस दृष्टिकोण से, एक कामकाजी महिला सशक्त महिला की श्रेणी में आती है। घरेलू महिलाएँ आमतौर पर जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों में पुरुषों पर निर्भर रहती हैं, जबकि पेज (1990) के अनुसार, "अपने जीवन को स्वयं निर्देशित और नियंत्रित करने की क्षमता ही सशक्तिकरण कहलाती है।" घर के बाहर स्वयं निर्णय लेने के कारण कामकाजी महिलाएँ इस सशक्तिकरण के अपनी एक अलग पहचान बना लेती हैं।

कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति

वर्तमान समय में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में कई महत्वपूर्ण प्रगति और चुनौतियाँ देखने को मिलती हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि देखी जा रही है। 2022-23 में महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) 37% तक बढ़ गई, जो 2017-18 में 23.3% थी। ग्रामीण क्षेत्रों में यह वृद्धि और अधिक है, जहां महिलाएं कृषि और स्वरोजगार से जुड़कर अपनी और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करने की कोशिश कर रही है। महिलाओं की शिक्षा में भी सुधार हो रहा है। उच्च शिक्षा में महिलाओं का नामांकन 2001 में 6.7% से बढ़कर 2021 में 27.9% हो गया है। सरकारी योजनाओं जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" और "सुकन्या समृद्धि योजना" ने लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित किया है।

1. **नौकरी और व्यवसाय:** आज महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में नौकरियां कर रही हैं और उद्यमिता में भी कदम रख रही हैं। सरकारी और निजी क्षेत्रों में उनकी भागीदारी बढ़ रही है। बिहार सरकार ने सरकारी नौकरियों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए महिलाओं की आरक्षण 35% से बढ़ाकर 65% करने का आदेश जारी किया हैं। जिसका असर आज हमें देखने को भी मिल रही है।
2. **आय में वृद्धि:** कामकाजी महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है, जिससे उनके जीवन स्तर में सुधार हो रहा है और वे आर्थिक रूप से अधिक मजबूत हो रही हैं।
3. **वित्तीय स्वतंत्रता:** महिलाएं अब अपने वित्तीय निर्णय खुद लेने में सक्षम हो रही हैं। वे निवेश, बचत और खर्च के मामलों में स्वतंत्र हो रही हैं।
4. **सरकारी योजनाएं:** सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं चलाई जा रही हैं जो महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देती हैं, जैसे मुद्रा योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, महिला उद्यमिता योजना आदि।

स्ट्रोमक्विस्ट (2005) के अनुसार, "आर्थिक सशक्तिकरण का मतलब है कि स्त्री किसी उत्पादन कार्य के माध्यम से स्वायत्तता प्राप्त कर सके। वर्तमान समाज में पहचान स्थापित करने के लिए आज परिवार की स्थिति सबसे महत्वपूर्ण हो गई है।" कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, जिससे वे अपनी आवश्यकताओं को प्राथमिकता दे पाती हैं और परिवार को भौतिक सुख-सुविधाएँ प्रदान करके सामाजिक और आर्थिक स्तर को बढ़ाने में मदद करती हैं। गोला (2016) के अनुसार, "महिलाएँ विशेषकर महानगरों में अपने घर-परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उठाती हैं और सशक्तिकरण की पहचान के रूप में वे घरेलू कामकाज के लिए किसी व्यक्ति को रोजगार भी दे पाती हैं।" इस प्रकार वे व्यक्तिगत सशक्तता की ओर कदम बढ़ा रही हैं। आर्थिक स्थिति के मूल्यांकन के संदर्भ में देखा जाए तो कामकाजी महिलाएँ आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं । इस सशक्तता के बल पर वे अपने और अपने बच्चों के हित में निर्णय लेने में सक्षम होती हैं। प्राचीन समय में आर्थिक अशक्तता के कारण सदैव पुरुष (जैसे पिता, पति, पुत्र) पर निर्भर रहने वाली महिलाएँ अब कामकाजी होने के कारण स्वनिर्देशित हो चुकी हैं। आर्थिक

सशक्तता के बल पर वे घरेलू समस्याओं के समाधान का हर संभव प्रयास करती हैं, हालांकि पैसा हर समस्या का तुरंत समाधान नहीं कर सकता। यदि घरेलू नौकर काम छोड़कर चला जाए तो उसका प्रतिस्थानी तुरंत मिलना कठिन हो सकता है। महानगरीय क्षेत्रों में, जहाँ महिलाएँ निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं, घर से कार्यस्थल तक पहुँचने में लगने वाला समय और कार्य समय को देखते हुए, महिला 12 घंटे घर से बाहर बिताती है। उसके पास केवल चार घंटे ही पारिवारिक संबंधों के निर्वहन के लिए बचते हैं, लेकिन वे परिवार, समाज और कार्यस्थल के उत्तरदायित्वों के बीच समायोजन की कोशिश में हमेशा लगी रहती हैं। समायोजन की इस प्रक्रिया में, वो अक्सर तनावग्रस्तता की स्थिति में भी आती हैं, फिर भी उनकी सशक्तता इन परिस्थितियों से उबरने में मदद करती है। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में 90 प्रतिशत महिलाएँ अभी भी अकुशल श्रमिक हैं, जिस कारण उन्हें उनके श्रम का उचित मजदूरी नहीं मिल पाता है। अकुशल होने के कारण वे उत्पादित माल पर भी नियंत्रण नहीं रख पाती हैं (sodhganga.inflibnet.ac.in)।

आज महिलाओं की स्थिति में सुधार हो रहा है और वे विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी प्रदर्शन भी कर रही हैं, मगर उन्हें आज भी सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। महिलाओं की सुरक्षा, शिक्षा और कार्यस्थल पर समानता सुनिश्चित करने के लिए सरकार और समाज दोनों को मिलकर प्रयास करना होगा। ताकि भेदभाव को समाप्त कर एक समृद्ध समाज, राज्य और राष्ट्र का निर्माण हो सके।

अभी भी महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए कई मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। इन सभी प्रगति के बावजूद, कई चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति बहुत ही दयनीय हैं। आज भी वेतन असमानता, कार्यस्थल पर भेदभाव, और कार्यस्थल पर सुरक्षा की कमी जैसी समस्याएं अभी भी हैं। इस प्रकार, वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, लेकिन इसे और अधिक सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

शोध कार्य के दौरान यह पाया गया कि विभिन्न सरकारी प्रयासों के परिणाम स्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ, जिसके फलस्वरूप 1951 में महिला साक्षरता का प्रतिशत 8. 86 था, जो 2011 में 65.46 प्रतिशत तक बढ़ गया (स्रोत जनगणना 2011)। यह भी स्पष्ट है कि निश्चित रूप से उनके साक्षरता दर बढ़ने के साथ-साथ उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थितियों में भी काफी बदलाव हुआ है। आज बिहार में कामकाजी महिलाओं की संख्या काफी बढ़ी है। महिलाएँ घर के काम के साथ ही बाहरी कार्यों में भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन सामंजस्य बनाकर करने लगी हैं। परंपरागत परिवेश में पली-बढ़ी महिलाएँ स्वाभाविक रूप से अपनी जिम्मेदारियाँ अपने ऊपर लेती तो है ही, साथ में परिवार की भी आर्थिक स्थितियों को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। सामाजिक दृष्टिकोण से भी, कामकाजी महिलाओं की समाज में अपनी एक अलग पहचान बन रही है और उनकी स्थिति घरेलू महिलाओं की अपेक्षा अच्छी मानी जा रही है। महिलाओं की अच्छी सामाजिक और आर्थिक स्थिति उन्हें व्यक्तिगत समस्याओं को नजरअंदाज करने की क्षमता प्रदान करती है। मनोवैज्ञानिक सशक्तिकरण भावनाओं के विकास से संबंधित होता है, जिससे महिलाएँ घर के समस्याओं में सुधार लाने में सक्षम होती हैं और उनके सामाजिक स्तर में वृद्धि होती है। चाहे महिला घरेलू हो या कामकाजी, उनकी भूमिका हमेशा ही महत्वपूर्ण होती है, लेकिन घरेलू महिलाओं के कार्य का मूल्य निर्धारित न होने के कारण कामकाजी महिलाओं को अधिक महत्व दिया जाता है। हालाँकि, वर्तमान में कामकाजी महिलाओं में सशक्तता के साथ, देर से विवाह और बच्चों की जिम्मेदारी से भय जैसे मुद्दे परिवार के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं। इसलिए, कामकाजी महिलाओं को विकास के पथ पर अग्रसर रहते हुए इन मुद्दों पर अवश्य विचार करना चाहिए और पुरुषों को भी महिलाओं के साथ घर की जिम्मेदारीयों में सहभागिता निभानी होगी। तभी महिला सशक्तिकरण को सार्थक संदर्भों में देखा जा सकेगा।

संदर्भ सूची

1. Bhadury A, Mukarjee AK. The Status of Indian Working Women in the Present Era. International Journal of Science, Technology, and Management. 2015 March;4special Issue(1).
2. Gola M. Bhartiya Pariwaro Me Kamkaji Mahila. Uttara; c2016 July-Sept.
3. Page R. Paths of Empowerment: Ten Years of Early Childhood Work in Israel. The Hague: Bernard van Leer Foundation; c1990.
4. Paycheck.in. 4 Key Social Forces to Improve the Status of Working Women in India. Retrieved from the internet on March 27, 2018.
5. Planningcommission.nic.in. XII Five Year Plan, Report of the Working Group on Women's Agency and Empowerment. Accessed on March 28, 2018.
6. Sriniwas RB. Women Empowerment and Planning Process. Retrieved from counterwriter.in on March 28, 2018.
7. Sodhganga.inflibnet.ac.in. The Status of Women in Indian Society. Retrieved from counterwriter.in on March 27, 2018.
8. Stromquist, Nelly P. The Theoretical and Practical Bases for Empowerment, in Women, Education and Empowerment. Discovery Publishing House, New Delhi; c2005.

9. Naree.com. Working Women in India: Have Their Problems and Status Changed?, Retrieved from the internet.
10. Merinews.com. Status of Working Women in India. Retrieved from the internet.
11. Wcd.nic.in. Report of the working group on empowerment of women for the XI Plan. Ministry of WCD, Govt. of India. Accessed from the internet on March 28, 2018.